AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारतीय कृषि एवं विदेशी व्यापारः एक अध्ययन संरचना देश

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. अरुणेश कुमार गुप्ता
सहायक प्राध्यापक वाणिज्य
विवेकानंद कॉलेज
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

स्वतंत्रता के पश्चात् जो आर्थिक संरचना देश को विरासत में प्राप्त हुई उसकी स्थिति बहुत दयनीय थी। देश के विभाजन में देश कि स्थिति को और दयनीय बना दिया था। विभाजन के कारण कपास और जूट जो देश से प्रमुख निर्यात वस्तुए थी, उनके उत्पादक क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत में विदेशी व्यापार उपनिवेशवादी व्यापार का रूप लिये हुए था। अधिकांश व्यापार ब्रिटेन तथा राष्ट्रमंडलीय देशों के साथ होता था। देश के आर्थिक विकास में कृषिगत वस्तुओं का निर्यात महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विदेशी व्यापार में कृषि उत्पादित वस्तुओं का योगदान एवं भूमिका का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है। प्रस्तुत शोध पत्र के वर्ष 2015–16 से वर्ष 2019–20 तक भारत के कुल निर्यात में कृषिगत वस्तुओं के निर्यात का विश्लेषण किया गया। कृषिगत वस्तुओं के व्यापार का अध्ययन कर देश की अर्थव्यवस्था में कृषिगत वस्तुओं के महत्व को जानने का प्रयास किया गया हैं।

मुख्य शब्द

विदेशी व्यापार, विदेशी निवेश, अर्थव्यवस्था, कृषि.

प्रस्तावना

कृषि वस्तुओं का विदेशी व्यापार

भारत जैसे विकासशील देशों आर्थिक विकास में कृषिगत वस्तुओं का निर्यात महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में कृषि उत्पादों के निर्यात एवं आयात व्यापार को तालिका के माध्यम दर्शाया गया है। स्वतंत्रता के पश्चात देश के निर्यात व्यापार को बजट बढ़ाने का सतत् प्रयास किया गया जिसके फलस्वरूप परम्परागत निर्यात के साथ साथ और परंपरागत निर्यात की मात्रा में भी पर्यात वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में भारत के निर्यात की प्रमुख वस्तुओं को चार वर्गो में बांटा जा सकता है

1. **कृषि एवं संबद्ध उत्पादः** इनमें कॉफी, चाय, खली, काजू, गरम मसाले, चीनी, कपास, चावंल, मछली– मांस, फल, सब्जियां एवं दाल शामिल है।
2. **अयस्क और खनिजः** इसमें अभ्रक एवं लौह अयस्क एवं अन्य खनिज शामिल है।
3. **निर्मित वस्तुएंः** इसमें सूती वस्त्र तथा सिले–सिलाये कपड़े, जूट से बनी वस्तुएं, चमड़ा एवं जूते, हस्त शिल्प, रत्न एवं आभूषण आदि शामिल है।

4. **खनिज इंधन तथा स्नेहक पदार्थः** इनमें लोहा एवं इस्पात, मैग्नीज, अभ्रक, रासायनिक पदार्थ, चीनी आदि सम्मिलित है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

1. भारतीय कृषि क्षेत्र में विदेशी व्यापार का विश्लेषण करना।
2. भारतीय कृषि क्षेत्र में विदेशी निवेश के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. भारतीय कृषि उत्पादन में विदेशी व्यापार के महत्व का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत तथ्यों की जानकारी के लिए द्वितीयक संमकों का प्रयोग किया गया है। संकलित समंको को एकत्रित एवं लिपिवद्व एवं वर्गीकरण करके उनका विश्लेषण किया गया है। उपलब्ध जानकारी संबंधित कार्यालय से प्राप्त की गई है। इस शोध पत्र में प्रस्तुत अध्ययन के दौरान अवलोकन व विचार विमर्श की विशिष्ट पद्धतियों को प्रयुक्त किया गया है। उक्त सभी स्त्रोंतों से प्राप्त जानकारीयो को संलग्न करने के पश्चात् आवश्यकतानुसार विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया है।

प्रस्तावना

कृषि उत्पादो का निर्यात व्यापार में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कृषि उत्पादो के निर्यात को निम्न तालिका में दर्शाया गया हैः

तालिका क्रमांक 1: भारत के कृषि उत्पादों का निर्यात

(करोड़ रुपये में)

वर्ष	देश के कुल निर्यात	कृषि उत्पादों का निर्यात	देश के कुल निर्यात में कृषि उत्पादों का प्रतिशत
2015–16	17,33,419.00	13,42,540.00	77.43%
2016–17	17,31,799.00	14,20,700.00	70.33%
2017–18	20,19,304.00	14,97,500.00	74.15%
2018–19	20,23,251.00	16,07,200.00	79.43%
2019–20	20,91,339.00	17,05,600.00	81.53%

*(**Source:** Economic Survey 2019-2020 and earlier issues)*

देश के कुल निर्यात में कृषि उत्पादों के निर्यात का प्रतिशत जो कि वर्ष 2015–2016 में 77.43 प्रतिशत था जो बढ़कर 2019–2020 81.53 प्रतिशत हो गया। इससे स्पष्ट है कि कुल निर्यात में कृषि उत्पादित वस्तुओं के निर्यात का प्रतिशत बहुत अधिक रहा है। प्रमुख कृषि पदार्थ जो निर्यात किये गये जिनमें दाल, मसूर, चावल, गन्ना, कपास, चाय आदि प्रमुख है। भारत चाय का पांचवा सबसे बड़ा निर्यातक है। भारत के प्रमुख कृषि निर्यातक देश अमेरिका चीन, बांगलादेश, इंडोनेशिया तथा मलेशिया है।.

भारतीय कृषि निर्यात व्यापार में कुछ महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो उत्पादन, भंडारण, वितरण, खाद्य सुरक्षा, मूल निर्धारण आदि से संबंधित परस्पर विरोधी एवं दोषपूर्ण नीतियों में उत्पन्न होती है। निर्यात के लिये बुनियादी न्यूनतम मात्राओं पर निर्णय करने की अनिच्छा भारतीय आपूर्ति स्त्रोतों को अविश्वसनीय बना देती है। उत्पादों की गुणवत्ता के बारे में अंर्तराष्ट्रीय बाजार में जागरूकता सृजित करने को कृषि निर्यातों को बढ़ावा देने के लिये सुदृढ़ करना आवश्यक हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि तथा बढ़ता हुआ

नगरीकरण एवं उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं में परिर्वतन से देश में ही निर्यात योग्य कृषि वस्तुओं की घरेलु मांग में तेजी से वृद्धि हुई है जिससे वे वस्तुओं का निर्यात करने में रुचि नहीं लेते है। कृषि उत्पादों के संबंध में सुरक्षित भंडार की नीति, कृषि उत्पादों की किस्म बिना श्रेणी का होना, विश्व बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना, आयात नीति का उदार न होना तथा उद्योगो द्वारा उत्पादन लागत को घटाकर विश्व बाजार की प्रतिस्पर्धा में बने रहना कठिन हो गया है जिसके परिणाम स्वरूप कृषि वस्तुओं के विदेशी व्यापार में बाधाएं उत्पन्न होती है। यदि इन बाधाओं को दूर किया जावे तो निर्यात व्यापार में वृद्धि की जा सकती है। देश में निर्यात योग्य कृषि वस्तुओं का तथा कृषि पर आधारित उद्योगों से निर्मित वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाकर तथा उत्पादन लागत में कमी करके एवं किस्म में सुधार करके विश्व व्यापार के प्रतिस्पर्धा में टिका जा सकता है। निर्यात परक उद्योगो को वित्तीय सहायता, कच्चा माल, आधुनिक यंत्र, औघोगिक जानकारी, नये बाजार की खोज, निर्यात विपणन, निर्मित संवर्धन हेतु विशेष संस्थाओं की स्थापना की जानी चाहिए, इसके अतिरिक्त भारत सरकार व्यापारिक संघो से भारतीय विदेशी व्यापार संस्थान आदि को विपणन अनुसंधान करना चाहिए और इस बात का पता लगाना चाहिए कि विदेशों में किन–किन उत्पादों की मांग है, ताकि इस प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन एवं निर्यात किया जा सके।

संदर्भ सूची

1. मित्रा जे.वी. (2018) *व्यावसायिक पर्यावरण,* साहित्यभवन प्रकाशन, आगरा।
2. सिन्हा सी.वी. (2019) *व्यावसायिक पर्यावरण,* एस.बी.पी.डी. प्रकाशन, आगरा।
3. आपूजा एच.एल., (2021) *उच्चतर समष्टि अर्थशास्त्र,* एस चंद प्रकाशन, उत्तर प्रदेश।
4. सिन्हा वी.सी. (2017) *समष्टि अर्थशास्त्र,* एस.बी.पी.डी प्रकाशन, आगरा।
5. लाल एस.एन. (2018) *अर्तराष्ट्रीय अर्थशास्त्र,* शुभम प्रकाशन, जयपुर।

––==00==––